भगवान भी मालिक नहीं

(कविता-संग्रह)

‘साथी’ जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
106, प्रथम तल, कान्हा एनक्लेव 52-54
CD ब्लॉक, दादूदयाल नगर, जयपुर-302029
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत ‘राज’

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 120/-

BHAGWAN BHI MALIK NAHI (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

दरिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह कायनात

खूबसूरत, महफ़ूज़ व खुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे है

अनुक्रम

अमर रचनाकार	11
अच्छाई में बुराई	15
फिर तो यक़ीनन	19
जैसे को जैसे	24
अनेकता में एकता	26
अंतिम उपचार	28
फिर कैसे	30
सिर्फ़ विरोध	34
सच्चा प्रायश्चित	38
यही सच	40
कर्म और कर्ता	44
समानता	49
प्रामाणिकता	52
स्वतंत्रता	54
सच्चाई	56
अनमोल दौलत	58
मन का वतन	68
मुलाकात	79
फिर तो क्यों	84
समय	91
शर्मसार	95

मेरी कलम से मेरे ख़यालात

पूर्व में तीन बार में एक साथ पाँच, छह और सात, कुल 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', ग्यारह छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख', 'सुसाइड नोट', 'लॉक डाउन', 'भगवान भी मालिक नहीं', 'स्वयं से ही प्रश्न' एक साथ प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

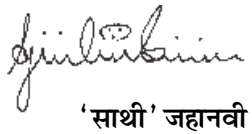

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

अमर रचनाकार

जो रचता है
वो ही तो
विशेष बचता है
वर्ना तो
शेष की भीड़ में
अनगिनत अवशेष
बिना पहचान से
गुमनाम रहता है

शेष के अवशेषों की
यादगार मिसाल से
समाज हित में
कोई भी योगदान
सभ्यता और संस्कृति में
नहीं होने की वजह से
स्मरण से स्मृति में नहीं

भले ही रचना
सृजन और निर्माण हो
या फिर विध्वंश, विकृति
विनाश और विसृजन हो

कंस ने क्रूरता
रावण ने छल
मंथरा ने साज़िश
शकुनी ने कपट
दुशासन ने दुराचार
धृतराष्ट्र ने अनीति
जिन्ना ने बँटवारा
अंग्रेजों ने फूट रची

इत्यादि ने
समय-समय पर
कुटिलता, पाप, मोहमाया, गद्दारी
बेवफ़ाई, झूठ, ठगी, कायरता
चालाकी और मक्कारी
इत्यादि बुराइयों से
विध्वंश, विकृति,
विनाश और विसृजन से
बुराइयों के दुराचार को
रचने वाले विशेष
संसार में अमर हो गये

शिव ने संहार
ब्रह्मा ने सृष्टि
विष्णु ने संरक्षण
नारद ने विनोद
सूरज ने ऊष्मा
चन्द्र ने चाँदनी
तारों ने प्रकाश

प्रकृति ने पंच तत्व
पेड़ों ने फल
फूलों ने खुश्बू
राम ने मर्यादा
कृष्ण ने पुरुषार्थ
चाणक्य ने राजनीति
कौटिल्य ने अर्थशास्त्र
ऋषि-मुनियों ने शास्त्र
व्यास ने वेद
दधिची ने दान
दुर्गा ने शक्ति
मीरा ने भक्ति
राधा ने विरह
सीता ने सतीत्व
शबरी ने श्रद्धा
अनसुइया ने तप
पार्वती ने साधना
प्रताप ने शोर्य
लक्ष्मी बाई ने वीरता
अम्बेडकर ने संविधान
टाटा ने उद्योग
पन्ना धाय ने बलिदान
शिवाजी ने चतुराई
भीष्म ने प्रतिज्ञा
द्रोपदी ने प्रतिशोध
युधिष्ठर ने धर्म
एकलव्य ने शिक्षा
द्रोण ने गुरु दक्षिणा

कर्ण ने मित्रता
भीम ने बल
अर्जुन ने लक्ष्य
गांधारी ने पति धर्म
कुंती ने संयम
प्रहलाद ने साहस
भागीरथ ने प्रयास
हरीश चन्द्र ने सच
शहीदों ने आज़ादी
गाँधी ने अहिंसा

इत्यादि ने
और भी बहुत सारे
अच्छे सृजन से
सदाचार की
समाज हित में
रचना की
इस प्रकार
यह सब विशेष
स्मृतियों में
विशेष होकर
सभ्यता और संस्कृति से
संसार में
अमर हो गये
बाकि
शेष में अवशेष
बिना पहचान के
लुप्त हो गये।

अच्छाई में बुराई

बुरा मत कहो
बुरा मत देखो
बुरा मत सुनो
यह तो
बहुत अच्छी बात है
जो सभ्य और संस्कारी
समाज पर लागू होती है
मगर हमारा
सांसारिक मोहमाया के
स्वार्थवश वशीभूत होकर
हमारा सभ्य और संस्कारी
होना मुमक़िन नहीं हैं

मगर इस अच्छी बात में
यह बहुत बुरी बात शामिल है
बस बुरा करते रहो
क्योंकि सब
हमारी ही तरह
बुरे को बुरा नहीं कहते
बुरी बातों को सुनकर भी
अनसुना कर देते हैं
बुराई को देखकर भी

अंधे हो जाते हैं
यह सब एक कायर
और डरपोक के लक्षण है
हम तो इससे भी
एक क़दम आगे बढ़कर
बुरे को भी अच्छा
साबित कर देते हैं
यह हमारे चरित्र का पतन है

यह अच्छी बात
अहिंसा तो
बिल्कुल भी
नहीं हो सकती
यह अच्छी बात तो
हिंसा से भी बढ़कर जुर्म है
क्योंकि गुनाहों को
होते हुये देखना
या ख़ामोश रहकर
चुपचाप गुनाहों को सहना
गुनाह करने से भी
बड़ा गुनाह होता है

बुरे को बुरा
और सच को सच
कहने के लिये
हिम्मत चाहिये
बुराई दिखाई
और सुनाई नहीं दे

इसके लिये
बुराई से लड़कर
बुराई को
ख़त्म करना पढ़ेगा
बुरे को बुरा नहीं कहना
सभ्यता और
समझदारी नहीं है
यह अच्छाई को
ख़त्म करने के लिये
बुरा करने के लिये
मौन स्वीकृति है
यानि बुराई के लिये
हौंसला अफज़ाई
और तरफ़दारी है

क्यों हम
मन के मैले होकर
तन को साफ़ रखते हैं
इस दोहरी मानसिकता से
क्यों ख़ुद को
तबाह करते हैं,
क्यों हम
अपने आपको
स्वार्थ के वशीभूत होकर
हर रोज वस्त्र की तरह
पहनकर निकलते हैं
क्यों वक़्त-वक़्त पर
मोहमाया में

गिरगिट की तरह
रंग बदल कर
अपने चरित्र के वस्त्र
क्यों बदल लेते हैं
क्यों नहीं हम
बुरे को बुरा कहते
ताकि बुरा देखना
और बुरा सुनना ही नहीं पढ़े

सच कड़वा होता है
बुरा देखने, सुनने
और कहने की
इस बीमारी का इलाज़
सिर्फ़ और सिर्फ़
सच कहने, देखने
और सुनने की
कड़वी दवा से ही
मुमक़िन हो सकता है।

फिर तो यक़ीनन

अगर माली ही
नापाक साज़िशे रचकर
अपने चमन के फूलों की
महकती हुई ख़ुश्बू को
बदबू से प्रदूषित कर दे
फिर तो महकता चमन
हर हाल में उजड़ेगा ही

अगर बागवान ही
नापाक साज़िशे रचकर
अपने बाग के पेड़ों को
रंजिश से विषैला कर दे
फिर तो यक़ीनन
आबाद पेड़ों के फल
ज़रूर ज़हरीले होंगे ही

अगर किसान ही
नापाक साज़िशे रचकर
अपने उपजाऊ खेतों को
विष के खाद से
विषैला कर दे
फिर तो यक़ीनन

ज़हरीली फ़सलों से
विषैला अन्न ही पैदा होगा
फिर तो करोड़ों इन्सान बेमौत मरेंगे ही

अगर हवा और पानी को
इसके लिये ज़िम्मेदार ही
नापाक साज़िशे रचकर
प्रदूषण से ज़हरीला कर दे
फिर तो देश में यक़ीनन
महामारी के कोहराम से
तबाही होना निश्चित है

अगर इन्सान ही
अपने स्वार्थ में
दीन और ईमान से
इंसानियत दफ़्न कर दे
फिर तो यक़ीनन
मानवता के विनाश से
मानव की बर्बादी निश्चित है

अगर नादान इन्सान
आधुनिक जीवन शैली के
रहन-सहन और खान-पान से
दिल और दिमाग़ से
गुलाम हो जाये
फिर तो यक़ीनन
सभ्यता और संस्कारों की
तबाही होना निश्चित ही है

अगर पुलिस
और प्रशासन ही
अपराधियों को
पनाह देकर
पनपने देती है
फिर तो यक़ीनन
देश में अराजकता
होना निश्चित ही है

जब अपने ही
नापाक साज़िशों से
आस्तीन के साँप होकर
या फिर जिस थाली में खाये
उसी में छेद करने लग जाये
फिर तो यक़ीनन
बेवफ़ाई और गद्दारी से
अपनों के हाथों तबाही से
बेमौत मरना निश्चित ही है

दुश्मन तो यक़ीनन
ऐसा करते ही हैं
मगर जब अपने ही
नापाक साज़िशे
रचने लग जायें
फिर तो यक़ीनन
अपनों के हाथों
रक्त-रंजित होकर
बेमौत मरना निश्चित ही है

अगर निर्माता ही
नाज़ायज फ़ायदे के लिये
नापाक साज़िश से
मिलावट करने लग जाये
फिर तो यक़ीनन
विकृति और विनाश के
विध्वंश से तबाही
होना निश्चित ही है

जब चाँद और सूरज
कुचक्र की क्रिया से
अपने पथ से
पथभ्रष्ट हो जाये
फिर तो यक़ीनन
अराजकता के दुष्कर्म से
अँधेरा होना निश्चित ही है

अगर विद्वान, गुरुजन
ऋषि मुनि और मनीषी
अपने कर्तव्यों के
दायित्व से विमुख हो जाये
फिर तो यक़ीनन
देश और समाज के
सभ्यता और संस्कारों का
विनाश होना निश्चित ही है

अगर परिवार का मुखिया ही
परिवार से बेवफ़ाई कर दे

फिर तो यक़ीनन
हर तरह की खुशहाली से
साधन-सम्पन्न परिवार का भी
एक दिन बदहाली से
तबाह होना निश्चित ही है

अगर इन्सान
नापाक साज़िशों से
नापाक ईरादों के
विचारों में जकड़ जाते हैं
फिर तो यक़ीनन
मानसिक गुलामी से
दूसरे के हाथों की
कठपुतली बनकर
उसके नापाक और
ख़ुदगर्ज़ ईशारों से नाचकर
अपने तन-मन की गुलामी से
स्वाभिमान जीवन की
तबाही होना निश्चित ही है।

जैसे को जैसे

मेरे कंधों पर
सर रख कर
वो कई बार रोया है
कई बार
मेरे कंधों पर
पैर रख कर
आगे बड़ा है
मैंने एक दिन
उसके कंधे पर
उसके फ़ायदे के लिये
हाथ क्या रख दिया
तो वो बुरा मान गया
यक़ीनन अब वो
इतना समर्थ है कि
अब उसे
मेरे कंधों की ज़रूरत
अंतिम समय के
लिये भी नहीं है
समय बहुत बलवान है
कंधे तो मज़बूत
और कमज़ोर होते रहते हैं
जब कभी उसको

उसके कमज़ोर कंधों के लिये
मेरी फिर से ज़रूरत होगी
तब मेरे मज़बूत कंधे
जैसे को जैसे का
सबक सिखाने के लिये
बिना किसी दुर्भावना के
कमज़ोर भी तो हो सकते हैं।

अनेकता में एकता

बरगद का वृक्ष
चाहता है कि
उसकी शाखाओं से
निकलकर
लटकती हुई जड़े
ज़मीन तक पहुँच कर
पोषण से हरी-भरी
और विशाल हो जाये
इस तरह से
बरगद के वृक्ष
और उसके तने का
अस्तित्व बना रहे

बरगद के वृक्ष में
शाखाओं की जड़ों का
यह नैतिक दायित्व
बनता है कि
अपने उद्‌गम
वट वृक्ष के तने को
अपनी जड़ों से जकड़कर
अपने उद्‌गम
बरगद के वृक्ष

और उसके तने का
अस्तित्व ही नहीं मिटा दे

वट वृक्ष की शाखाओं का
अस्तित्व और पहचान
अपने उद्‌गम
वट वृक्ष के तने से
मज़बूती से जुड़कर
रहने में ही हैं
अन्यथा शाखायें
अपने-अपने स्वार्थ में
एक दूसरे से रक्त रंजित संघर्ष में
ज़ख्मी होकर टूट जायेंगी

शाखाओं का यह भी
फ़र्ज़ बनता है कि
नफ़रत और रंजिश के
ज़हरीले आतंक का पोषण
ज़मीन से नहीं ले
अपितु षड्‌यन्त्र और बहकावे के
आँधी तूफ़ान से
वट वृक्ष की रक्षा करे
अन्यथा वट वृक्ष
खोखला होकर गिरेगा
तो शाखाओं का वजूद भी
अपनी-अपनी ख़ुदगर्ज़ी में
तबाही और बदहाली में
बेरहमी से ख़त्म हो जायेगा।

अंतिम उपचार

तन मन धन से
बदहाल इन्सान का
कोई भी उपचार
जब शेष नहीं रहता है
तो कहते है कि
इस बदनसीब का तो
भगवान ही मालिक है
जब ऐसे बदहाल
बदनसीब इन्सान का
रहम दिल भगवान भी
मालिक नहीं रहे
तो बदहाल हालात
कितने ख़तरनाक है
इसका अंदाजा
लगाना भी मुश्किल है
तब उस बदहाल
बेबस इन्सान के
दिल और दिमाग़ की
मानसिक मनोदशा
हैरानी और हताशा से
ख़ुदकुशी करने के
बहुत क़रीब होती है

तब ख़ुदकुशी ही
सिर्फ़ और सिर्फ़
उसकी समस्याओं के
सम्पूर्ण समाधान का
एक मात्र उपचार होती है।

फिर कैसे

वस्त्र बदलकर
पहचान बदल दोगे
दांडी और मूँछ से
शक़्ल भी बदल दोगे
विचारों की धारणाओं से
व्यक्तित्व भी बदल दोगे
सोच और समझ से
स्वभाव भी बदल दोगे

ख़ून का लाल रंग
कैसे बदल पाओगे
शरीर की आकृति
कैसे बदल पाओगे
कुछ अंग भी बदल दोगे
मगर सभी अंगों की
प्राकृतिक क्रियायें
किस तरह से बदलोगे

औरत का धर्म भी
ज़बरन बदल दोगे
मगर माँ की ममता
स्नेह और करुणा

पत्नी के अहसास
और बहन के जज़्बात को
किस तरह से बदलोगे

धर्म के अनुसार
इन्सान के रहन-सहन
और खान-पान को
सभ्यता और संस्कारों से
ज़बरन बदल भी दोगे
मगर खाने-पीने के
तौर-तरीके कैसे बदलोगे

धर्म के अनुसार
रिश्तों की पहचान को
कोई भी नाम दे दोगे
मगर हर धर्म में
रिश्तों के एक जैसे
जज़्बात को कैसे बदलोगे

मासूम बच्चे को
कोई भी नाम दे दो
मगर उसकी मासूमियत
और नटखट बचपन को
किस तरह से बदलोगे

विवाह के रीती-रिवाज़
शृंगार और रस्मों को भी
धर्मानुसार बदल दोगे

मगर विदाई के वक़्त
आँखों से बहते आँसू
किस तरह से बदलोगे

बहन और बेटियों की
धर्मानुसार अलग-अलग
नाम और पहचान कर लोगे
मगर ज़बरदस्ती के वक़्त
एक जैसी ही चीख-पुकार
वेदना और दर्द की
कैसे पहचान करोगे

मटके, रोटी, पानी
और भूखे-प्यासे की
पहचान तो कर लोगे
मगर भूख और प्यास की
एक जैसी तड़प को
कैसे पहचान कर पाओगे

धर्म के अनुसार
प्रार्थना और साधना के
तरीके अलग-अलग
मगर ईश्वर से दुआ करने के
एक जैसे तरीके की
कैसे पहचान करोगे

इलाज के तरीके भी
धर्मानुसार बदल दोगे

मगर सब में बीमारी के
एक जैसे लक्षण को
कैसे बदल पाओगे

मृत शरीर को तो
अलग-अलग तरीके से
खाक में मिला दोगे
मौत के बाद आत्मा
कहाँ चली जाती है
यह कैसे मालूम करोगे।

सिर्फ़ विरोध

कोई भी इन्सान
मेरा दोस्त क्यों है
वो इस बात पर
मेरा विरोध करते हैं
वो तो इस बात पर भी
मेरा विरोध करते हैं कि
कोई मेरा दुश्मन क्यों है

मेरे लिये क्या अच्छा
और क्या बुरा है
इससे उनको
कोई मतलब नहीं
उनको तो इससे भी
कोई मतलब नहीं हैं कि
स्वयं उनके लिये
क्या अच्छा
और क्या बुरा है
फिर भी उन्होंने
बिना सोचे-समझे
मेरे हर अच्छे काम का
विरोध ही करना हैं

क्योंकि वो विपक्ष है
और विपक्ष का
सिर्फ़ और सिर्फ़
यही मतलब होता है कि
विपक्ष को हर हाल में
पक्ष का ही विरोध करना है
भले ही विपक्ष का
कितना भी बड़ा और ज़्यादा
फ़ायदा क्यों नहीं होता हो

ऐसी विकृत
मानसिकता की
सोच और समझ को
यह कहना उचित होगा
ख़ुद अपने पैरों पर
कुल्हाड़ी मरना
या फिर
हम तो डूबेंगे सनम
तुम्हें भी ले डूबेंगे

ऐसी नकारात्मक
सोच और समझ से
ख़ुद इन्सान
अपना तो
दुश्मन होता ही है
प्राणी मात्र सहित
सारी मानव जाति का भी
दुश्मन होता है

ऐसे इन्सान ख़ुद तो
अपने मन के
मालिक नहीं होते
और न ही
ऐसे इन्सानों का
कोई दूसरा ही
मालिक होता है
यहाँ तक कि
ईश्वर भी
ऐसे इन्सानों का
मालिक नहीं होता

क्योंकि जिन इन्सानों को
अपने ऊपर ही
भरोसा और विश्वास
नहीं होता हैं
वो दूसरों के
दिमाग़ की सलाह से
दर-दर भटकते रहते हैं

वैसे भी
ऐसे चरित्रहीन
इन्सानों का कोई भी
दीन और ईमान नहीं होता
और जिन भी इन्सानों का
किसी भी प्रकार से
दीन और ईमान नहीं होता
वो किसी भी प्रकार के

भरोसे और विश्वास के
लायक बिल्कुल भी नहीं होते

ऐसी विकृत
और नकारात्मक
सोच और समझ वाले
नालायक इन्सान
किसी भी काम के
नहीं होने की वजह से
धरती पर बोझ होते हैं।

सच्चा प्रायश्चित

गंगा स्नान करने से
हज यात्रा करने से
मंदिरों में भेंट चढ़ा देने से
चर्च में माफ़ी माँग लेने से
गुरु द्वारों में लंगर का
खाना खिला देने से
बौद्ध मठों में साधना करने से
जैन मंदिरों में प्रार्थना करने से
समाज में भोजन करा देने से
कुछ रुपये दान कर देने से
गुनाह माफ़ नहीं हो जाते हैं

जो गुनाह मैंने किये हैं
उन गुनाहों के परिणाम
जब तक मैं स्वयं
नहीं भुगत लेता हूँ
तब तक उन गुनाहों की
सज़ा से मैं बच नहीं सकता

गुनाहों के
परिणामों से
दर्द का अहसास

जब तक
मुझे नहीं होगा
तब तक वो दर्द
स्वयं का दर्द
नहीं हो सकता
जो दर्द
स्वयं का नहीं है
वास्तव में
उस दर्द को
मन से महसूस
नहीं किया जाता है
इसलिये
दूसरों के दर्द को
स्वीकार नहीं
किया जा सकता है

जब तक
मैं स्वयं
सबके सामने
अपने गुनाहों को
शर्मसार होकर
कुबूल नहीं कर लेता
तब तक मेरे गुनाहों का
प्रायश्चित नहीं हो सकता।

यही सच

सच के साथ
जीने के तो
हज़ार रस्ते,
सबके सब
बहुत ही सस्ते

खुल गये
अक़्ल से
बंद ताले,
हाथ मलते रहे
चाबी के गुच्चे

बदनीयती के
नापाक ईरादों
और ख़ुदगर्ज़ी में,
वतन के हो गये
बंटवारे से दो हिस्से

दिल से मत चाहो
किसी को,
वर्ना ज़माना
सुनायेगा क़िस्से

अमीर दादा की
अमीर पोते में जान,
मोह में वशीभूत होकर
मोहमाया के बन्धन से
जंजीरों में जकड़े रिश्ते

झूठ के आँधी
और तूफ़ान में
बचेगे सिर्फ़ और सिर्फ़,
निर्मल और पवित्र
पेड़-पौधे ही सच्चे

ज़ुबान की
कोई भी
क़ीमत नहीं,
जो नादान है
कान के कच्चे

बड़ों के भी
पर कतर लेते हैं,
मासूम, नटखट
शरारती, चुलबुल
बातूनी बच्चे

साधू-संत और
फ़कीर के चोले में
हवस के दरिंदे,
ज़माने की नज़र में
होते चरित्र से लुच्चे

ज़िन्दगी
और मौत के
ज़िन्दा सवाल,
वही तो करेंगे
जो है ईमान के पक्के

समझकर भी
जो समझदार
नहीं समझते,
बदनीयत से
दो कौड़ी के टुच्चे

जमाखोरी की
नाइंसाफ़ी से
जमा करी दौलत,
सरे-आम लुटे गये
बग़ावत में बक्से

रक्त रंजित इंसानों
और बेईमानी के पुलिंदे,
बयान और गवाही से
इंसाफ के सुबूतों में
वकील, पुलिस, प्रशासन
और पटवारी के बस्ते

बेगुनाह जेल में
और गुनाहगार
बा-इज्ज़त बरी,

झूठे गवावों में
सबूत के दस्ते

जब तक
कुछ साबित
नहीं हो जाता,
तब तक शैतान भी
दिखते हैं बहुत अच्छे

सब के साथ में
सब के विकास से
ख़ुद अपना विकास
बेबसी से हाथ मलकर
तमामउम्र खायेगा धक्के।

कर्म और कर्ता

कोई भी कर्म
छोटा-बड़ा
और ऊँचा-नीचा
नहीं होता,
कर्म नहीं मानता
अमीरी-ग़रीबी
धर्म और जाति के
जकड़े हुये बंधन,
कर्म तो
उपयोगिता से
सदैव सार्थक

कर्म भेद नहीं करता
कर्ता के कर्म में
कर्म का फल
कर्ता को ज़रूर
कर्म के अनुसार,
कर्ता तो
मात्र साधन
कर्म ही साध्य से
आराध्य

कर्म से ही
कर्ता का नाम
और मान-सम्मान
कर्ता महत्वपूर्ण नहीं
कर्म मूल्यवान
कर्म के मूल्याकंन से
कर्ता महत्वपूर्ण

जब तक
क्रिया नहीं होगी
तब तक
कर्म और कर्ता
अर्थ और आधार हीन
क्रिया करने के तरीके
बता देते हैं कि
कर्ता की कर्म में
कितनी और कैसी
मन से निष्ठा
कुशल और बुद्धिमान
कर्ता के प्रयत्न पर ही
कर्म की सफ़लता निर्भर

जब कर्म
निष्काम है तो
सत्कर्म से सदाचार
जब कर्म में
काम है तो
दुष्कर्म से दुराचार

कर्म विकार से
विनाश, विकृति
और विध्वंस
कर्म सद्भाव
और सदाचार से
सृजन और निर्माण
कर्म निर्मल
और पवित्र है तो
कर्ता तन-मन से
सहज और सरल

कर्म हीन जीव को
कुछ भी प्राप्त नहीं
कर्म हीन भक्ति में भी
कोई भी शक्ति नहीं,
यह संसार कर्म प्रदान
ईश्वर भी जीव को
कर्म का ही देता है फल
कर्म से भाग्य जाते हैं बदल
भाग्य से कर्म और कर्ता नहीं

असम्भव कर्म भी
कर्ता की आशा
और निरन्तर प्रयास से
सम्भव होकर साकार
कर्म से कर्ता
जाते हैं सुधर
तो बिगड़ भी जाते

यह कर्ता के
कर्म पर
निर्भर करता है,
कर्म तो
अच्छा-बुरा
होकर भी
कर्म ही रहता है
अच्छे-बुरे कर्म से ही
कर्ता की
पहचान बदलती है,
अब तक अनगिनत
कर्ता आये और चले गये
मगर कर्म स्थिर है
आदि से अनंत तक

जीव ही कर्म नहीं करते
प्रकृति में पंच तत्व के
कर्म से ही जीव में
कर्ता, क्रिया और कर्म है,
सूर्य के कर्म
प्रकाश और अग्नि से ही
जीव में गति और ऊष्मा है
हवा के कर्म से ही
जीव में प्राणों का संचार है
पानी के कर्म से ही
जीव की प्यास है
धरती के कर्म में ही
जीव के रोटी

कपड़ा और मकान है
आकाश कर्म से
जीव आत्मा का अध्यात्म है
कर्ता में ऐसे कर्म
अनमोल और बेमिसाल है

कर्म ही धर्म है
अगर कर्म जायज है तो,
नाज़ायज करना भी तो
कर्म ही होता है
मगर वो कर्म अधर्म है,
स्वभाव ही तो
कर्ता का कर्म होता है
जैसा कर्म होगा
वैसा ही तो कर्ता होगा
या फिर
जैसा कर्ता होगा
वैसे ही कर्म होंगे
जीव में,
कर्ता और कर्म
समानांतर है
क्रिया की प्रक्रिया
इनके बीच में
दूरी की समानता है।

समानता

मेरा अस्तित्व
मुझे प्रिय है
किन्तु 'मैं' पर
जैसा मेरा अधिकार है
वैसा अस्तित्व पर नहीं है,
मुझसे जो भिन्न है
उसका भी अस्तित्व है
और उसे उसका अस्तित्व
उतना ही प्रिय है
जितना कि
मेरा अस्तित्व
मुझे प्रिय है,
बाहरी उपकरणों की
दृष्टि से हम
भिन्न हो सकते हैं
किन्तु अस्तित्व की शृंखला में
हम सब एक समान हैं

शरीर, भाषा
भौगोलिक सीमायें
संप्रदाय और जाति
ये सब समानता के

समर्थक नहीं हैं
किन्तु इन में प्राण संचार
चैतन्य से होता है
और उसके जगत में
हम सब समान हैं

हमारे मन में
असमानता के संस्कार
अधिक तीव्र हैं,
हमारी इन्द्रियाँ
बाहर की ओर झाँकती हैं
और जो बाहर हैं
वह सब असमान हैं,
असमानता के भाव से
प्रेरित होकर
हम अपने ही जैसे
लोगों के साथ
अन्याय करते हैं,
हमारी न्याय बुद्धि
तभी जागृत हो सकती है
जब हम समानता की धारा को
अविरल प्रवाहित करें

लोकतन्त्र
समानता की
प्रयोग भूमि है,
समान अधिकार का सिद्धांत
दार्शनिक समानता के

व्यवहारिक रूप से है,
लोकतन्त्र की
सफलता के लिये
यह अपेक्षित है कि
उसके नागरिकों में
समानता के प्रति आस्था हो।

प्रामाणिकता

दूसरों के प्रति
सच्चा रहना
प्रामाणिकता तो है
किन्तु यह विचार
व्यावहारिक नहीं है,
जो अपने प्रति
सच्चा रहता है
प्रामाणिकता की
वही परिभाषा सच्ची
और व्यवहारिक है,

जो दूसरों का
बुरा करने में
अपना बुरा देखता है
असल में वही
बुराई से बच सकता है
वो ही निरपेक्ष दृष्टि से
प्रामाणिक रह सकता है

जिसकी सच्चाई का आधार
व्यवहार की पृष्ठभूमि होता है
वह तब सच्चा रहता है

जब कोई दूसरा देखता है,
वह तब सच्चा रहता है
जब प्रकाश में होता है,
अकेले में और अँधेरे में
जो सच्चाई प्राप्त होती है
वह अपने पर ही
आधारित हो सकती है।

स्वतंत्रता

कोई भी
अन्याय करता है
इसका अर्थ है कि
वह दूसरों के
अधिकारों का
अपहरण करता है,
कोई दूसरे के अधिकार का
अपहरण करता है
तो इसका अर्थ है कि
वह उसे अपने नियंत्रण में
रखना चाहता है,
अपने नियंत्रण में
रखने का अर्थ है
उसे वह अपने
जैसा नहीं मानता है

बुद्धिमान और
समर्थ व्यक्ति
मंदबुद्धि और अक्षम
व्यक्तियों को
शासित करता है
यह सर्वथा

अनुचित भी नहीं है,
अक्षम का हित
सुरक्षित करने के लिये
यदि सक्षम ऐसा करता है
तो कोई तर्क नहीं है कि
उसे अनुचित कहा जाये,
यदि सक्षम अपना हित
साधने के लिये
अक्षम को शासित करता है
तो वह समानता की
आधारशिला को जर्जर करता है

दूसरों की स्वतंत्रता में
पक्का विश्वास हो तो
क्या कोई भी
अन्याय कर सकता है,
स्वतंत्रता
लोकतंत्र की आत्मा है
यदि स्वतंत्रता को
लोकतंत्र से
अलग कर दिया जाये तो
लोकतंत्र का अर्थ होगा
निरंकुश राज्य स्वतंत्रता में
अमोघ आस्था रखने वाला
आक्रान्ता कैसा होगा,
परतंत्रता की चिंगारी
कभी भी स्वतंत्रता से
अग्नि का रूप ले सकती है।

सच्चाई

जो अपने प्रति
सच्चा नहीं होता
वह राष्ट्र के प्रति
कभी भी
सच्चा नहीं होता,
कई इन्सान
राष्ट्र की
भलाई के लिये
सच्चे होते हैं
और कई इन्सान
अपनी भलाई के लिये,
सच्चाई का बीज
हर इन्सान में होता है

वह निमित्त का
निमित्त पाकर
अंकुरित हो जाता है
अपनी आंतरिक प्रेरणा से
अंकुरित होने वाले के लिये
यह निश्चित परिभाषा
नहीं बनाई जा सकती है
कि वह परिस्थिति से

प्रभावित नहीं होगा,
पर सच्चाई
लोकतन्त्र का
सौन्दर्य तो है ही
फिर चाहे वह किसी भी
निमित्त से अंकुरित हो।

अनमोल दौलत

मदद

कुछ देने में ही
बहुत कुछ पाना है
किसी ज़रूरतमंद की
मदद के बदले में
उसकी, दिल से दुआ है,
जहाँ पर दौलत सहित
सब कुछ असफल
निरर्थक और बेकार है
वहाँ पर सिर्फ़ और सिर्फ़
दुआ ही तो काम आती है
फिर क्या मदद ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

सम्मान

पाने वाला याचक है
देने वाला दाता है
दाता का ही तो
सारे संसार में
मान और सम्मान है,
यह सम्मान ही है
जिसे किसी भी क़ीमत पर

ख़रीदा नहीं जा सकता
फिर क्या सम्मान ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

ईमान

बेईमान की कमाई से
कुछ ही दिनों का
ऐश और आराम है,
पाप का घड़ा तो
एक दिन फूटेगा ही
फिर ज़लालत से
ज़िन्दा रहना हराम है
फिर क्या ईमान ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

माँ

सारा जग ही नहीं
ईश्वर भी नतमस्तक है,
माँ की ममता, स्नेह
और करुणा के आँचल में
हर तरह की ख़ुशहाली से आबाद
जन्नत का सारा जहान है
फिर क्या माँ ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

निरोगी जीवन

साधन-सम्पन्न होकर
रोजाना बहुत कुछ है

खाने-पीने के लिये
मगर सब कुछ बेकार,
मन को मार कर बेबस
कुछ भी सक्षम नहीं
खाने-पीने के लिये
लाइलाज बीमारियों से,
फिर क्या हमारा
निरोगी जीवन ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

संतोष

आनन्द, सुख
और आराम की
मृग तृष्णा में
अनंत ईच्छाओं से
इन्सान भ्रमित है
दिन में रात है
और रात में दिन है
भाग दौड़ के जीवन में
असंतोष की रफ़्तार से
सुखी जीवन की चाह में
इन्सान घायल है
फिर क्या संतोष ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

प्रकृति

कृत्रिम साधनों के
वशीभूत होकर

हर कोई इन्सान
गुलामी की जंजीरों से
कैद में जकड़ा हुआ जीवन
क़ुदरत के हसीन नज़ारों से
महरूम और बेजार है
जबकि प्रकृति के क़रीब
सतरंगी बसंत की बहार
और रिमझिम बारिश से
सावन की फुहार है
फिर क्या प्रकृति ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

शजर

अप्रत्यक्ष रूप से
बहुत कम लेता है
प्रत्यक्ष रूप से
बहुत कुछ अनमोल
हवा, पानी, छाया और फल
नि:शुल्क और नि:स्वार्थ देता है
शजर का यह स्वभाव ही तो
अनमोल दान से महादान है
फिर क्या शजर का
यह स्वभाव ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

मृत शरीर

आत्मा तो अमर है
आत्मा तो शरीर से

निकलकर जा चुकी
अपने गंतव्य स्थान पर
मृत शरीर को तो
एक दिन जलाकर
या फिर दफ्न करके
नष्ट करना ही है
मगर मृत शरीर में भी
कुछ अंग ऐसे होते है
जो किसी ज़रूरतमंद को
जीवन का दान दे सकते हैं
और जीवन का दान ही तो
अनमोल दान होता है
फिर क्या मृत शरीर
अनमोल दौलत नहीं है

समय

जो समय गुज़र गया
वो वापस नहीं आ सकता
किसी भी क़ीमत पर,
समय बहुत बलवान
समय ने राजा को रंक
और रंक को राजा बनते देखा है,
समय के पास
अच्छी-बुरी घटनाओं के
अनमोल अनुभव है
और अनुभवों में ही
सीख और सबक
ज्ञान और विज्ञान

सृजन और विसृजन
विकास और विनाश है
तो क्या फिर
समय का सदुपयोग
अनमोल दौलत नहीं

धर्म

दौलत चोरी हो जाती है
संपत्ति भी नष्ट हो जाती है
धन की चिंता में
दिन का चैन और सुक़ून
रातों की नींद हराम हो जाती है
दौलत मोहमाया में जकड़ सकती है
दौलत दंगा-फसाद
और ख़ून-खराबा करा सकती है
दौलत भाई-भाई को
ख़ून का प्यासा बना सकती है
दौलत गहरे दोस्तों को
परम शत्रु बना सकती है
इन सारी विपत्तियों
और समस्याओं का समाधान
सिर्फ़ और सिर्फ़ एक मात्र
धर्म के स्वभाव में ही है
तो क्या फिर धर्म
अनमोल दौलत नहीं है

कर्म

स्वभाव ही धर्म है

धर्म में ही कर्म है
कर्म में ही तो
जीवन का मर्म है

कर्म से ही तो
जीवन में सदाचार है
मान और सम्मान है
संसार में नाम है
इन्सान क्रिया शील है
भूख-प्यास शांत है
रोटी, कपड़ा व मकान है
मोहमाया से मोक्ष है
ज्ञान और विज्ञान है
रिश्तों के अहसास है
नातों के जज़्बात है
व्यापार और रोजगार है
तीज और त्यौहार है
उत्साह और उमंग है
निरोगी कंचन काया है
सूरज का प्रकाश है
चन्द्रमा की रोशनी है
प्रकृति में संतुलन है

कर्म से ही तो
दिन में दिन है
रात में रात है
सपनों की बारात है
सुहागन का शृंगार है

जीवन में संस्कार है
रीति और रिवाज है
सम्मान का पुरुस्कार है
अभिमान का गुमान है
कर्म से ही तो
सांसे और धड़कन
नहीं तो जीव बेजान है
कर्म के बिना तो
नामुमक़िन जहान है
क्या फिर कर्म ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

दुआ

जब ज्ञान-विज्ञान भी
असफल हो जाते हैं
आधुनिक साधन
और उपकरण भी
नाकाम हो जाते हैं
अकूत दौलत भी
बिना काम की हो जाती है
तब हर तरह से निराश
हैरान और परेशान के
सिर्फ़ और सिर्फ़
दुआ ही तो काम आती है
दुआ से ही तो
बिगड़े काम बन जाते हैं
क्या फिर दुआ ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

आचरण

पत्थर दिल
शैतान और हैवान भी
सद्भाव और सदाचार के
आचरण से पिघलकर
रहम दिल और शरीफ़
इन्सान बन जाते हैं
सद्भाव और सदाचार से
किसी का भी दिल
जीता जा सकता है
क्या फिर आचरण ही
अनमोल दौलत नहीं है

त्याग

वैसे भी सब कुछ
यहीं पर ही
छोड़कर जाना है
फिर नाजायज़
क्यों कमाया जाये
जायज़ भी कमाया जाये
तो फिर क्यों
नाजायज़ संग्रह किया जाये
वैसे भी त्याग में ही
मोहमाया से मोक्ष है
और मोक्ष में ही
जीव की मुक्ति है
क्या फिर त्याग ही तो
अनमोल दौलत नहीं है

वैसे तो प्रकृति का
हर कण-कण
अपनी सार्थक
उपयोगिता से
मूल्यवान हैं
मगर समय
और परिस्थितियों से
ज़रूरत बनकर
अनमोल हो जाते हैं।

मन का वतन

हर इन्सान का
यह फ़र्ज़ होता है कि
वह जहाँ पर रहता है
वहाँ पर वह अपने वतन
मज़हब, परिवार, रिश्ते-नाते
कुनबे, दीन और ईमान
रस्मो-रिवाज, इबादत स्थलों
मज़हबी किताबों, सभ्यता,
संस्कृति, रहन-सहन
खान-पान, ज़मीन जायजाद
और सरहद की किसी भी
क़ीमत पर हिफ़ाज़त करे

इन्सान दो तरह से
अपने वतन में रहता है
एक तो मन से
मन के वतन में
दूसरा तन से
मन से पराये वतन में,
मन से तो मन की ख़ुशी का
मालिक होकर राजी-ख़ुशी से
साधन-सम्पन्न होकर रहता है,

तन से तो वह मज़बूरी में
मन से पराये वतन में
अपने फ़ायदे के लिये
ख़ुदगर्ज़ी और मौका परस्ती में
मन को मारकर ग़मगीन
बदहाली, कष्ट और दुख में
क़ैद होकर लाचारी से रहता है

मन ही तो बड़ा होता है
मन की ख़ुशी ही असल में
सच्ची और हमेशा के लिये
मनमाफ़िक ख़ुशी होती है,
मनमर्ज़ी की ख़ुशी से
जो आनंद वास्तव में
मन के वतन में आता है
वह बेबस और लाचार होकर
मन से पराये वतन में
तन से रहने में नहीं आता,
मन के वतन में
मन की ख़ुशी तो
अनमोल होती है
उसे ज़ुबान से बयान
नहीं किया जा सकता है

इसलिये कोई भी
वो सब कुछ
अपने मन के मुताबिक़ ही
मन से करना चाहता है

ताकि उसे मन से ख़ुशी
मन के वतन में मिले,
भले ही उसे उसके लिये
उस वतन से ही
ग़द्दारी और बेवफ़ाई ही
क्यों नहीं करनी पढ़े
जहाँ पर वह
साधन-सम्पन्न होकर
हर तरह के एशो-आराम से
हर तरह से महफूज़ रहता है,
मगर उसे बेहद अफ़सोस
और मलाल रहता है कि
मनमर्ज़ी से मनमाफ़िक
अपने मन के वतन में
मन की ख़ुशी से रह नहीं पाता

इसलिये वह
अपमे मन के वतन में
अपने मन की ख़ुशी को
प्राप्त करने के लिये
वह हर हाल में
वो हर मुमक़िन
कोशिशें करता हैं
जो नाजायज़ भी
उसकी नज़र में जायज़ है,
उसे आप और हम
उस वतन से बग़ावत
और ज़ेहाद कहते हैं

जहाँ पर वह तन से
हर तरह से सुरक्षित
और साधन-सम्पन्न होकर
बेबसी और लाचारी में
बेहद अफ़सोस और मलाल से
मन से पराये वतन में
मन को मारकर रहता है

जायज़ और नाजायज़ तो
अपनी-अपनी नज़र
और सोच-समझ से होते हैं,
जो काम किसी के लिये जायज़ है
वो किसी और के लिये
उसके नफा-नुकसान
और ख़ुदगर्ज़ी में जायज़ होता है
ऐसी सोच और समझ
आप और हम मिलकर
एक-दूसरे के बारे में रखते हैं

मन की ख़ुशी के लिये
मन से पराये वतन में
वह उस वतन के प्रशासन
पुलिस, कानून, न्याय
और संविधान को नहीं मानता
जिस वतन में वह
हर तरह से साधन-सम्पन्न
और हर तरह की ख़ुशहाली से
महफूज़ होकर रहता है,

अगर बेहद अफ़सोस
और मलाल में बेमन से
बेबस और लाचार होकर
मज़बूरी में मानता भी है
तो सिर्फ़ और सिर्फ़
अपने फ़ायदे के लिये मानता है

हम तो मन की ख़ुशी
और मन के वतन के लिये
इतने ख़ुदगर्ज़ हो जाते हैं कि
हमारी सदियों पुरानी विरासत
सभ्यता और संस्कृति को भी
तहस-नहस कर देते हैं
जो हमारे पुरखों के वतन की
आदि-अनादि काल से
रस्मो-रिवाजों की पहचान रही है

उसके नाजायज़ काम में
वतन से बेवफ़ाई
गद्दारी और बग़ावत तो
आपकी और हमारी नज़रों में हैं,
अपने मन की ख़ुशी में
उसके मन के वतन के लिये तो
पाक जेहाद और बग़ावत है

मन को मारकर रहना तो
बहुत बड़ी मूर्खता और पाप है
अपने मन को मारकर

कोई भी चैन और सुकून से
कभी भी नहीं रह सकता है,
इसलिये हम सबकी
अक्लमंदी इसी में हैं कि
हम सब अपने मन के
अहसास और जज़्बात की
आवाज़ को सुने और समझे
इस सब में ही
हम सबकी भलाई है,
आपको और हमें
अपने मन के वतन में
अपने मन की ख़ुशी के लिये
जो कुछ भी जायज़
और नाजायज़ हैं
वो निश्चित रुप करना चाहिये
क्योंकि अपने मन की ख़ुशी
अपने मन के वतन में
अनमोल और ख़ुशगंवार होती है,
भले ही वह उस वतन से
बेवफ़ाई, बग़ावत, नाइंसाफ़ी
और ग़द्दारी ही क्यों नहीं हो
जहाँ पर आप और हम
हर तरह से साधन-सम्पन्न होकर
हर तरह से महफूज़ रहते हैं

आप और हम
कौन और कैसे हो सकते हैं
किसी को नाजायज़, ग़लत

बेवफ़ा और ग़द्दार कहने वाले,
क्या आप और हम
अपने मन के वतन में
अपने मन की ख़ुशी के लिये
हर हाल में वो हर मुमक़िन
कोशिशें बार-बार नहीं करते
जो अपने मन की ख़ुशी के लिये
मन के वतन में बेहद ज़रूरी हैं

भले ही वो प्रयास
दूसरों की नज़रों में
ग़लत, बुरे, बेकार, बेमकसद
और नाजायज़ ही क्यों नहीं हो
भले ही मन की ख़ुशी के लिये
करोड़ो मासूम और बेकुसूर का
कत्ले-आम ही क्यों नहीं हो जाये
भले ही वतन दहशतगर्दी
और आतंकवाद की अराजकता में
अपराधों से तबाह होकर
बदहाल ही क्यों नहीं हो जाये

भले ही हमें वतन के
मान और सम्मान को
किसी चालाक, ख़ुदगर्ज़
मौका परस्त और बेईमान को
नाजायज़ शर्तों पर ही क्यों नहीं
बेचना और गिरवी रखना पढ़े

अंतिम सत्य यही है कि
अपने मन के वतन में
मन की ख़ुशी ही तो
सच्ची ख़ुशी होती है,
तन का क्या है
उसे तो एक दिन
खाक में मिलना ही है,
कोई मन की ख़ुशी
जीते जी पा नहीं सका
अगर मरकर भी
उसके अपनों को
अपने मन के वतन में
उनके मन की ख़ुशी
उसकी शहादत से मिलती है
तो उसकी पाक शहादत
कामयाब हो जाती है

वैसे भी
अपने मन के
वतन के लिये
शहीद होना तो
पाक जेहाद होता है,
उसे जन्नत नसीब होती है
जन्नत में हूरों के साथ
एशो-आराम नसीब होता है
जो सिर्फ़ और सिर्फ़
मन के वतन के लिये
मन की ख़ुशी में

जेहाद का मकसद लेकर
शहीद होने पर ही
फ़रिश्तों को नसीब होता है,
मन की ख़ुशी में
मन के वतन के लिये
शहादत से शहीद होना
फिर क्यों और कैसे
बुरा, ग़लत, नापाक
पाप और नाजायज़ है

जैसा जेहाद और बग़ावत
आपने और हमने मिलकर
अंग्रेज हुकूमत के
ख़िलाफ़ किया था,
लाखों क्रांतिकारियों की
अजर अमर शहादत
और करोड़ों मासूम बच्चों
और बेकुसूर का कत्ले-आम हुआ
तब जाकर के आप और हमें
अपने मन की ख़ुशी
और मनमाफ़िक वतन मिला था

अब अगर मन की ख़ुशी
और मनमाफ़िक वतन के लिये
वैसी ही शहादत और क़त्ले-आम
फिर से दोहराया जा रहा है
तो हम क्या ग़लत कर रहे हैं,
जो उस वक़्त सही था

अब कैसे ग़लत हो सकता है
उस वक़्त का सही और सच ही
इस वक़्त आज के हालात में
सही और सच ही हो रहा है

मन से पराये वतन में
अपनों के बिना
जुदाई और तन्हाई में
कैसे त्यौहारों का मजा
अपनों के बिना
बेगानों से कैसा याराना
अपनों के बिना
हर तरह से साधन-सम्पन्न
मकान भी श्मशान लगता है
अपनों के साथ रहने के लिये
दिलो-दिमाग़ बेक़रार रहता है

हम तो उस पराये वतन को
अपने मनमाफ़िक मन का
वतन बनाने के लिये
मरने-मारने की हद तक
जी जान से कोशिश कर रहे हैं
जहाँ पर हम हर तरह से
साधन-सम्पन्न और महफ़ूज हैं,
कोशिशों के साथ-साथ
ख़ुदा का रहमो-करम भी
हमारे साथ रहे तो
शारीरिक ताकत के साथ-साथ

मानसिक ताकत भी मिल जाती है
तो फिर कामयाबी को
बहुत कम कोशिशों में
आसानी से अमली जामा
पहनाया जा सकता है

इसलिये ए-परवर दिगार
तुम तो बहुत रहम दिल हो
अपने मन के वतन में
अपने मन की ख़ुशी के लिये
हमारे दिल की दुआओं, ख़्वाहिशों
और मन की मुरादों को पूरी कर दो

अपनों के बिना
हर तरह से महफ़ूज
होते हुये भी
मन से पराये वतन में
मन की ख़ुशी के बिना
साधन-सम्पन्न ज़िन्दगी भी
दोजख से भी बदतर लगती है,
डर-डर कर ग़मगीन
और ख़ौफ़ज़दा होकर
मौत के साये में जीना पड़ता है।

मुलाकात

शायद प्रकृति
हमसे कुछ चाहती हो
अपनों से, अपने आप से
मुलाकात 'करो ना'
मानो या ना मानो
कोई तो दिव्य शक्ति है
जो आपसे और हमसे
हम सबसे ज़्यादा बड़ी है
जो आपसे और हमसे
ज़्यादा समझती है

क्या मालूम
इस शैतान वायरस के
प्रकोप और भय में
ज़िन्दगी जीने का
कोई ऐसा सच छुपा हो
जो आप और हम
अब तक नकार रहे थे

शायद प्रकृति हम से
कुछ कहना चाह रही थी
पर पागल जीवन की

असंतुष्ट और अनंत
ख़ुदगर्ज़ ख़्वाहिशों से
दिन-रात की भागदौड़ में
हमें वक़्त ही
नहीं मिलता कि
हम अपने मन की
सुने और समझे
या हम किसी की
कुछ भी सुने और समझे

हो सकता है कि
यह ज़ालिम वायरस
हमें फिर से
जोड़ने आया हो
अपने वतन से
अपनी ज़मीन से
अपनी प्रकृति से
अपने संस्कारों से
अपने खान-पान से
अपने रहन-सहन से
अपने रीति-रिवाजों से
अपने घर-परिवार से
सभ्यता और संस्कृति से
मन और दिलो-दिमाग़ से
और स्वयं अपने आपसे

ध्वनी प्रदूषण
कुछ कम हो तो

हमें चैन और सुकून मिले
वायु प्रदूषण का
कार्बन कुछ कम हो तो
आकाश भी अपने फेफड़ों में
कुछ आक्सीजन ले पाये
हम नील गगन में
चाँद और तारों के
हसीन नज़ारे देख सके

शॉपिंग मोल
और सिनेमा घर में
कुछ दिनों के लिये
ताले लग जाये तो
हमारे दिल के ताले
स्वत: ही खुल जायेंगे,
हो सकता है
किताबों के पन्नों में
सिनेमा से अधिक
आनंद का रस मिले

हमें अपने बच्चों को
अपने बचपन और जीवन के
किस्से सुनाने का मौका मिले,
हमें अपने बच्चों से
उनके मासूम और नटखट
बचपन की शरारते देखने
और सुनने का वक़्त मिले

अन्ताक्षरी
ताश के पत्ते
लूडो की बाजी
कैरम की गोटियाँ
साँप सीडी, हाउजी
जैसे घरेलू खेल हमें
अपनों के करीब ला दे

शायद पता चल जाये
अपने घर का शुद्ध
और पोष्टिक खाना
जज़्बात और मनुहार से
होटल और रेस्टोरेंट से
ज़्यादा स्वादिष्ट होता है

खर्चीले और तकाउ
सैर सपाटे से बचकर
हम सबके घर
स्वर्ग से सुन्दर हो जाये

हो सकता है
जो हो रहा है
उसमें एक अद्‌भुत,
सत्य छुपा हो,
यक़ीनन यह वायरस
कुछ सोचने-समझने
और समझाने आया है
कुछ कहने आया है

कुछ करवाने आया है
कुछ दिनों के
लिये ही सही
बेबस होकर ही सही
भयभीत होकर ही सही
हम अपनी प्रकृति से
अपनो से, अपने आप से
एक बार मुलाकात तो
ज़रूर दिलो-दिमाग़ से करें।

फिर तो क्यों

जब सब कुछ
यहीं पर ही
छोड़कर जाया जाये,
फिर तो क्यों
नाजायज़ कमाया जाये

अगर जायज़ भी
दीन और ईमान की
मेहनत से कमाया जाये,
फिर भी क्यों
बिना काम का बेकार
गैर ज़रूरी सामान
नाजायज़ इकट्ठा किया जाये

कमाई नाजायज़ ही सही
खरीद-बिक्री और लेन-देन
या फिर दिखावे के
दान में ही क्यों न सही,
अगर चलन में है तो
क्रय शक्ति से मूल्यवान है
और कुछ हद तक तो
जायज़ भी हो ही जाती है,

अगर तिजोरियों में बंद है
तो बिना किसी क्रय शक्ति के
महज रद्दी से कागज़ के
टुकड़ों के समान है,
फिर क्यों दौलत को
तिजोरियों में सड़ाया
और गलाया जाये

किसी को भी
इस तरह से
तो न डराया जाये,
महज बीमारी को
मौत का साया
तो न बताया जाये

उम्मीद की
एक किरण ही
काफी होती है
हताशा में जकड़े
हैरान के लिये,
फिर क्यों निराशा में
अमावस की अँधेरी
घनी काली रातों का
अंधकार किया जाये

जब डूबते हुये को
तिनके का सहारा ही
बहुत बड़ा होता है,

तो घास-फूस के समान
बेकार पड़ी हुई
धन-दौलत को,
फिर तो मदद से
ज़रूतमंदों के लिये
तिनका बनाया जाये

असहाय की मदद
नहीं कर सको
तो कोई बात नहीं,
सांत्वना के दो बोल से
हमदर्दी का मरहम
विश्वास से लगाया जाये

तप कर ही तो
सोना कुंदन होता है,
लगन से कोशिशों को
मेहनत और ईमानदारी की
भट्टी में तपाया जाये

वैसे तो ख़ुदा
हर जगह पर
मौजूद रहता है
इबादत कुबूल
करने के लिये,
कोरोना में भी
मौजूद ही रहेगा,
कम से कम

कोरोना में तो
घर से ही
सज़दा किया जाये

तन के हारने से नहीं
मन के हारने से ही तो
असल में हार होती है,
मुश्किलों में जकड़े हुये का
जोश और जुनून से तो
कम से कम दिल से
हौसला तो बढ़ाया जाये

रंज और गम में
फ़िज़ूल रोने से
क्या फ़ायदा मिलेगा,
परेशानियों से
मुक़ाबला करने के लिये
उम्मीद और हिम्मत में
ऐतबार से मुस्कुराया जाये

परवर दिगार के
रहमो-करम तो
अमीर और ग़रीब
छोटे और बड़े
दलित और सवर्ण
सबके लिये एक समान,
दिल और दिमाग़ में
दरिया दिली को कुछ तो

दिल में बसाया जाये
बिगड़े हुये काम भी
बनकर संवर जाते हैं,
नेकी और भलाई से
दिली पाक दुआओं में
असर दिखाया जाये

जीवन सागर में
जायज़ ज़रूरतों के
आँधी और तूफ़ान में
ख्वाहिशों और ख़्वाबों से
मझधार में कश्ती,
संघर्षों में कर्म को
जोश और जुनून से
पतवार बनाया जाये

जो डर गया
समझों वो मर गया
डर के आगे ही तो जीत है,
चमत्कार को ही तो
ज़माने का नमस्कार है,
जब बहुत कुछ नामुमकिन को
कुछ तो मुमकिन कराया जाये

ज़माने को तो
ऐतबार आ ही जायेगा,
ईमान को सिर्फ़
अपनी जुबान से

सिर्फ़ सुना कर नहीं
दीन और ईमान को
ख़ुद अपने ऊपर लाया जाये

यारों से किसी काम से
मुलाकात तो ख़ुदगर्ज़ी,
बिना कोई मक़सद
और बिना काम के
सिर्फ़ गप्पे मारने
और हँसी-मजाक के लिये
हँसने और हँसाने जाया जाये

हसीन यादों में
उम्र क़ैद की सज़ा,
नादान और कमबख़्त को
सब के सब दिलवाले
तलाशते रह जायेंगे,
अगर किसी के दिल को
दिल से चुराया जाये

दुआओं से
ख़ज़ाने बढ़कर
कभी भी
खाली नहीं होंगे,
अगर दौलत को
बिना अहसान
और ख़ुदगर्ज़ी के
ग़रीबों पर लुटाया जाये

जो सच्चा है
वही तो जीवन में
निर्मल और पवित्र
सहज और सरल है,
दीन और ईमान से
सच्चाई को बचाया जाये

तन से गुनहगार है
मन से शर्मसार है
तड़पकर जल रहा है
जुर्म की ज्वाला में
गुनाह कुबूल करने को
बेताब और बेक़रार है
प्रायश्चित को तैयार है
उदारता से क्षमा कराया जाये।

समय

जिस समय पर
जैसा समय है
वो समय
वैसा ही गुज़रेगा
जैसा उसे गुज़रना है,
समय को
कोई टाल नहीं सकता
जो होना है
वो होकर ही रहेगा
क्योंकि समय
होनी भी है
अनहोनी भी है

मूकदर्शक होकर
हम बेबस हैं
गुज़रते समय को
देखने के लिये,
समय ही तो
समय का समाधान है,
समय बहुत बलवान है
हम समय से
लड़ नहीं सकते

तो समय को
जीत भी नहीं सकते,
हम समय से
बचने के लिये
सतर्क होकर
सिर्फ़ और सिर्फ़
संघर्ष कर सकते हैं
वो भी सिर्फ़ और सिर्फ़
समय के अनुकूल होकर ही

समय ने
बहुत कुछ देखा है,
समय से हमनें
बहुत कुछ सीखा हैं,
समय
सतर्क होकर
सबक है
भविष्य के लिये,
समय
सावधान होकर
वर्तमान है
सोच-समझ से
जीने के लिये

सावधान
और सतर्क समय
ज़रूर पहुँचता है
अपनी मंज़िल पर,

समय के सागर में
निश्चितता और
अनिश्चितता की
उफ़नती लहरों में
कश्ती होती है
बिना पतवार के

समय का
कोई मोल नहीं
समय अनमोल है,
समय ही मालिक है
हम तो विवश है
समय के अनुसार
ख़रीदने और बिकने के लिये

कोई सुखी है
तो उसका समय
अच्छा और अनुकूल है,
कोई दुखी है
तो उसका समय
बुरा और प्रतिकूल है,
मगर समय के
अनुसार रहने वाला
संतोषी और समझदार
सुखी है हर समय में

समय के
अनुसार रहने की

हमें आदत हो जाती हैं
मगर जब
समय बदलता है
तो हमारा समय
ख़राब हो जाता है
समय विपरीत होकर,
हम नादान है
जो समय को
बुरा कहते हैं,
समय तो चक्र है
निरंतर गतिमान है
उसे तो हर हाल में
गुज़ारना है अच्छा-बुरा होकर।

शर्मसार

या तो उसके सामने
या फिर उसके सामने
उसे तो हर हाल में
शर्मसार होना ही है
तो फिर क्यों नहीं
उसकी सोच और समझ
ख़ुशी और इच्छा से ही
शर्मसार हो जाऊँ
जिसकी वजह से
उसे शर्मसार होना है

शर्मसार करने वाला
अफ़सोस और मलाल से
कहाँ शर्मसार होता है
कि कोई तो अपना भी
शर्मसार होता है मेरी वजह से,
शर्मसार होने वाला
फिर शर्मसार होता है
शर्मसार करने वाले के
शर्मसार नहीं होने से

कहीं न कहीं तो
भ्रम है दोनों को

एक-दूसरे की
सोच और समझ में
वर्ना क्यों नहीं शर्मसार होता
शर्मसार करने वाला

अधिकारों में
कर्तव्य तो
होना ही चाहिये
वर्ना अधिकार
अधिकार होकर भी
शर्मसार होता है,
जब अधिकार में
कर्तव्य नहीं होता
तब भी अधिकार
शर्मसार होता है

अगर कर्तव्य में
कर्तव्य नहीं होता
तब भी तो कर्तव्य
शर्मसार होता है,
अगर कर्तव्य
अधिकार हो जाये
तो भी कर्तव्य
और अधिकार
दोनों शर्मसार होते हैं,
मगर जब तक कर्तव्य
शर्मसार नहीं होगा
जब तक अधिकार तो
शर्मसार होता ही रहेगा।